❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

आर्य संदेश टीवी
Arya Sandesh TV
www.AryaSandeshTV.com
आर्य समाज का 24 घण्टे चलने वाला टीवी चैनल
303 335 2038

वर्ष 45, अंक 25 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 18 अप्रैल, 2022 से रविवार 24 अप्रैल, 2022
विक्रमी सम्वत् 2079 सृष्टि सम्वत् 1960853123
दयानन्दाब्द : 199 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
दूरभाष: 23360150 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम के जन्मोत्सव रामनवमी के अवसर पर विभिन्न राज्यों में आयोजित शोभा यात्राओं पर पथराव की घटना

पथराव व उपद्रव संयोग या षडयंत्र? प्रशासन से कठोर कार्यवाही की मांग

भारत ऋषि-मुनियों की भूमि है। यहां श्री राम, श्री कृष्ण, वीर हनुमान, महर्षि दयानंद, स्वामी श्रद्धानंद आदि महापुरुषों ने जन्म लिया है। उन्होंने अपनी वैदिक संस्कृति सभ्यता और संस्कारों की रक्षा के लिए, मानवीय मूल्यों संरक्षण के लिए बड़े से बड़े बलिदान दिए हैं, उनके प्रेरणा पर्वों पर इस प्रकार की घटनाएं हमें जगाती हैं कि अगर अब भी नहीं जागे तो फिर कब जागेंगे।

जागो रे जिन जागना, अब जागन कि बार... अगर इसी तरह सोते रहे तो सब कुछ लूट जाएगा, और सब कुछ लुटाकर होश में आए तो क्या? इसलिए समय रहते समाज को जागना होगा, अपनी शक्तियों को समझना होगा, अपने महापुरुषों से प्रेरणा लेकर आगे बढ़ना होगा, नहीं तो बहुत देर हो जाएगी। रामनवमी और हनुमान जयन्ती पर घटी यह घटना कोई साधारण घटना नहीं है, इस पर जहां प्रशासन पूरी तत्परता से कार्यवाही करे वहीं समाज भी अपने देश और अपनी संस्कृति की रक्षा के लिए जागरूक हो।

हमारे पुण्यमय भारत देश की संस्कृति में पर्व त्यौहारों का विशेष महत्व है। यहां समय समय पर पर्वों से प्रेरणा लेकर मानव समाज उन्नति-प्रगति के पथ पर अग्रसर होता है। पिछले दो वर्षों से कोरोना महामारी के कारण सरकार के प्रतिबंध के अनुरूप पर्व त्यौहारों को सीमित दायरे मनाया जा रहा था। इस वर्ष जब लगभग भारत की बड़ी आबादी को 2 डोज तो कुछ को बूस्टर डोज तक लग चुकी है, कुल मिलाकर इसकी संख्या 200 करोड़ हो गई है। कोरोना लगभग समापन की ओर है, केंद्र सरकार और राज्य सरकारों द्वारा प्रतिबंध समाप्त किए जा रहे हैं, महर्षि दयानंद जन्मोत्सव, बोधोत्सव, होली, नवसंवत्सर प्रतिपदा, नवरात्र, रामनवमी आदि पर्व देश के कोने में उमंग, उत्साह से मनाए गए हैं। लेकिन रामनवमी के अवसर पर कुछ अराजक तत्वों द्वारा जुलूस आदि कार्यक्रमों के आयोजन में पथराव करके रंग में भंग डालने की कोशिश की है, इन गलत नियत रखने वाले साम्प्रदायिक लोगों की आर्य समाज कड़ी निन्दा और भर्त्सना करता है। साथ ही आर्य समाज गहरा रोष व्यक्त करते हुए मांग करता है कि राज्य सरकारें वैमनस्य फैलाने वाले साम्प्रदायिक लोगों के ऊपर कठोर कार्यवाही करे। धर्म, सँस्कृति और संस्कारों की रक्षा के लिए समाज को समय रहते जागना भी चाहिए।

मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम प्रेम और करुणा की प्रतिमूर्ति थे, उनका जन्म और जीवन मानवसमाज के उत्थान के लिए समर्पित था, त्रेता युग में जन्मे भगवान श्री राम की शिक्षाएं जितनी उनके समय में

- *शेष पृष्ठ 7 पर*

दिल्ली के जहांगीपुरी में हनुमान जयन्ती शोभायात्रा पर पथराव की घटना कहीं एक और प्रयोग तो नहीं?

पर्व त्यौहारों पर उपद्रवों के इस क्रम में उत्तर-पश्चिमी दिल्ली के जहांगीरपुरी इलाके में 16 अप्रैल 2022 शनिवार को हनुमान जयंती पर निकाले गए जुलूस में पथराव के बाद हिंसा की वारदात से एक वर्ग विशेष की साजिश के संकेत नजर आ रहे हैं। अधिकारियों के मुताबिक, शोभायात्रा पर उपद्रवियों ने पथराव किए। गाड़ियों में तोड़फोड़ की और कुछ को आग के हवाले कर दिया। हिंसा की यह वारदात यहीं तक सीमित नहीं रही बल्कि उपद्रवियों ने लोगों पर गोलियां चलाई, डंडे, पत्थर और तलवार आदि से भी जानलेवा हमले किए। जिसमें पुलिस कर्मी तक घायल हो गए। अब जब पुलिस कार्यवाही में आरोपितों को गिरफतार करके पूछताछ की जा रही है तो कुछ राजनीतिक दल अपने वोटबैंक को साधने के लिए सांप्रदायिक बयानबाजी कर रहे हैं। आर्यसमाज की मांग है कि रामनवमी में पांच राज्यों के बाद अब हनुमान जयंती पर दिल्ली में इस तरह की हिंसा पर सरकार को कुछ निर्णायक कदम उठाकर यह सुनिश्चित करना चाहिए कि जिससे भारत में हिंदू अपने पर्व अपनी परंपराओं के अनुसार मना सकें।

रेलवे स्टेशनों पर भी खुलेंगे वैदिक साहित्य प्रचार स्टाल
आर्यसमाज के युवा कार्यकर्ताओं को मिलेगा स्वरोजगार का अवसर

आर्य समाज के प्रचार-प्रसार और विस्तार के लिए प्रयासरत दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा काफी लंबे समय से कोशिश की जा रही थी की भारतीय रेलवे स्टेशनों पर वैदिक साहित्य के स्टाल लगाए जाएं, जिनके माध्यम से महर्षि दयानंद सरस्वती जी की शिक्षाओं को, वैदिक धर्म, संस्कृति और संस्कारों को तथा आर्य समाज के सिद्धान्त, मान्यता और और परम्पराओं को जन-जन तक पहुंचाया जाए। इसके लिए सभा ने रेलवे के कार्यालय में सारी औपचारिकता पूर्ण की। परिणामस्वरूप सभा की अपेक्षित योजना सफल हुई और नार्थ सेंट्रल रेलवे के **मिर्जापुर, फतेहपुर, अलीगढ़, वीरांगना लक्ष्मीबाई जंक्शन झांसी, ग्वालियर, मथुरा, आगरा फोर्ट तथा आगरा कैंट** के कुल 10 प्लेटफार्मों पर वैदिक साहित्य बिक्री केन्द्र (बुक स्टाल) खोलने की स्वीकृति प्राप्त हो गयी है। वैदिक साहित्य स्टाल चलाने के इच्छुक आर्य युवा तथा आर्यवीर श्री सतीश चड्डा से मो. 9540041414 पर यथाशीघ्र सम्पर्क करें। *- महामन्त्री*

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा बैठक
रविवार 24 अप्रैल, 2022 सायं : 3:30 बजे

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा बैठक **रविवार 24 अप्रैल, 2022** को आर्यसमाज हनुमान रोड, नई दिल्ली के सभागार में **सायं 3:30 बजे** से आयोजित की गई है। सभी माननीय सम्मानित अधिकारियों, अन्तरंग सदस्यों, विशेष आमन्त्रित सदस्यों को बैठक का ऐजेण्डा विधिवत् भेज दिया गया है।

अतः सभी सम्मानीय सदस्यों से निवेदन है कि बैठक में अवश्य ही पहुंचकर अपनी उपस्थिति दर्ज कराएं एवं निर्णयों में अपनी भागीदारी प्रस्तुत करें।

-: निवेदक :-
धर्मपाल आर्य (प्रधान) विनय आर्य (महामन्त्री)

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा बैठक
रविवार 1 मई, 2022 प्रातः 11 बजे

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा बैठक **रविवार 1 मई, 2022** को आर्यसमाज हनुमान रोड, नई दिल्ली के सभागार में **प्रातः 11:00 बजे** से यशस्वी प्रधान श्री सुरेशचन्द्र आर्य जी की अध्यक्षता में आयोजित की गई है। सभी माननीय अधिकारियों, सदस्यों, विशेष आमन्त्रित सदस्यों एवं प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं के माननीय प्रधान एवं मन्त्री महोदयों को बैठक का ऐजेण्डा विधिवत् भेजा गया है।

अतः सभी सम्मानीय सदस्यों से निवेदन है कि बैठक में अवश्य ही पहुंचकर अपनी उपस्थिति दर्ज कराएं एवं निर्णयों में अपनी भागीदारी प्रस्तुत करें।

- प्रकाश आर्य, सभामन्त्री, सार्वदेशिक सभा, नई दिल्ली

देववाणी-संस्कृत

राष्ट्र वन्दना करो

भद्रमिच्छन्त ऋषयः स्वर्विदस्तपो दीक्षामुपनिषेदुरग्रे।
ततो राष्ट्रं बलमोजश्च जातं तदस्मै देवा उपसंनमन्तु।। -अथर्व. 19/41/1
ऋषिः **ब्रह्मा।।** देवता - **तपः।।** छन्दः **त्रिष्टुप।।**

शब्दार्थ - स्वर्विदः = आत्मसुख प्राप्त किये हुए **ऋषयः** = ऋषियों ने **भद्रं इच्छन्तः** = लोक-कल्याण की इच्छा करते हुए **अग्रे** = प्रारम्भ में **तपः उपनिषेदुः** = तप का अनुष्ठान किया और **दीक्षां उपनिषेदुः** = दीक्षा को ग्रहण किया। **ततः** = उस तप और दीक्षा से **राष्ट्रं जातम्** = राष्ट्र उत्पन्न हुआ तथा **बलं ओजश्च जातम्** = राष्ट्रीय बल और ओज भी उत्पन्न हुआ तत् = इसलिए **अस्मै** = इस राष्ट्र के सामने **देवाः** = देव भी **उपसंनमन्तु** = ठीक प्रकार झुकें, सत्कार करें।

विनय - हे राष्ट्रीय भाइयो! क्या तुम जानते हो कि यह राष्ट्र कैसे उत्पन्न हुआ है? हम वैयक्तिक पुरुषों के समूहात्मक इस राष्ट्र-पुरुष का कैसे जन्म हुआ? यह हमारे पूर्व-ऋषियों के 'तप'(पिता) और 'दीक्षा' (माता) का पुत्र है। प्रारम्भ में उन सत्यदर्शी ऋषियों ने, जिन्हें स्वयं आत्मसुख प्राप्त था, जो आप्तकाम थे, अतएव जिन्हें अपना कुछ भी स्वार्थ न था और इसलिए जो केवल लोक-कल्याण के लिए जी रहे थे, भद्र के लिए (लोक-कल्याण के लिए) तप का अनुष्ठान किया। उन्होंने देखा कि सर्वलोकहित के लिए यह आवश्यक है कि वैयक्तिक शक्ति (बल व ओज) से ऊपर एक ऊद्दची-बड़ी उत्कृष्ट शक्ति (बल और ओज) व्यक्तियों के सामने हो, अतः उन्होंने अपनी इस भद्र-कामना का विस्तार किया- सब मनुष्य एक-दूसरे का भला चाहें; मनुष्यों में एक सामुदायिक भले की भावना उत्पन्न हो-इसका उन्होंने घोर यत्न किया। चूँकि मनुष्यों के क्षुद्र स्वार्थ इस उच्च भावना के विरोधी हैं, अतएव उन ऋषियों को मनुष्यों में इस भावना के जमाने में बड़े कष्ट सहने पड़े, बड़ी-बड़ी तपस्याएँ करनी पड़ीं, परन्तु वे दृढ़-संकल्प ऋषि तो व्रत ग्रहण किये हुए थे, दीक्षित थे, मानो इसी प्रयोजन के लिए जन्मे थे, अतः उन्होंने अपना व्रत पूर्ण किया और इस भावना को उत्पन्न कर दिया। सब व्यक्तियों में उत्पन्न हुई इस भावना की मूर्ति ही राष्ट्र है। इस प्रकार हे राष्ट्रीय भाइयो! यह हमारा राष्ट्र उत्पन्न हुआ है और इस राष्ट्र-पुरुष का वह अभीष्ट बल ओर ओज भी प्रकट हो गया है, जिससे सम्पूर्ण राष्ट्र का कार्य चलता है, अतः हे देवो! ऋषियों की तपस्याओं से उत्पन्न हुए इस बलवान् तेजस्वी राष्ट्र-देव के सामने तुम भी झुको। यह राष्ट्रात्मा महादेवता देवों का भी वन्दनीय है। राष्ट्र का एक व्यक्ति बड़े-से-बड़ा, विद्वान्-से-विद्वान्, महात्मा-से-महात्मा, देव-से-देव होता हुआ भी राष्ट्र का एक व्यक्ति- उस संघात्मक राष्ट्र के सामने तुच्छ है। हे राष्ट्र के व्यक्ति देवो! तुम इस राष्ट्र-देव की वन्दना करो। अपनी सम्पत्तियों को, अपने तुच्छ लाभों को, अपने शारीरिक एवं मानसिक या रुपये-पैसे के स्वार्थ को तथा अपनी बड़ी-से-बड़ी, प्यारी-से-प्यारी कामनाओं को राष्ट्रीय हित के सामने तुरन्त झुका देने के लिए तैयार रहो। यही राष्ट्र-देव की वन्दना है।

वेद-स्वाध्याय

-: साभार :-
वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

आधुनिक तकनीकी उपयोग और उसके लाभ-हानि पर शोधपरक पड़ताल

क्या स्क्रीन टाइम हमारे लिए बेहद खतरनांक हो सकता है?

आज ईमानदारी से एक औसत निकाला जाये कि इन्सान अपना कितना समय मोबाइल, लेपटोप या फिर आईपैड पर व्यतीत करता है तो शायद नतीजे बेहद चौकाने वाले आयेंगे। अगर इसमें मिडिल वर्ग को देखा जाये तो शायद कुछ लोग 4 से 6 घंटे कामकाजी लोग 10 घंटे और कुछ लोग तो स्क्रीन पर शायद 12 घंटे से भी अधिक टाइम व्यतीत कर देते है। बहुत कुछ पढ़ते है, लिखते है, देखते है- इसके अलावा अपने मित्रों से बात करते है।

देखा जाये तो स्क्रीन टाइम की ये दुनिया इतने आगे बढ़ चुकी है कि बच्चे भी गंभीरता से अपने खुद के फोन की मांग करने लगे हैं। कभी पढाई के नाम पर, ऑनलाइन क्लास के लिए, अपने दोस्तों के साथ बातचीत करने के लिए। यानि सोशल मीडिया, व्हाट्सएप समूहों से लेकर यूट्यूब तक हर चीज के लिए या सबको पकड़ने के लिए। ये एक आभासी अथवा आधुनिक दुनिया से जुड़ने का ये एक केंद्रीय हिस्सा सा बन चुका है। यहाँ तक कि अगर कोई सोशल मीडिया पर नहीं है तो उसे पिछड़ा समझा जाने लगा है।

हालाँकि जिनके बच्चे थोड़े बड़े हो रहे हैं, उनके लिए अब यह चिंता बढ़ गई है कि आठ साल का बच्चा गेम खेलने में कितना समय बिताता है! या फिर अपनी उम्र की अनुकूलता के बजाय कहीं वो कुछ खराब चीजों में व्यस्त तो नहीं है! वो इस समय ऑन स्क्रीन है, यानि एक दूसरी और अज्ञात दुनिया के बीच- वो मोबाइल या आईपैड पर खेल रहा है। कहीं ऐसा तो नहीं उसके मासूम से मन और दिमाग से कोई दूसरा तो नहीं खेल रहा है?

जैसा कि हम देखते है कि बीडी, सिगरेट, तम्बाकू के पेकेट हो या फिर शराब, बीयर आदि की बोतल यानि हर प्रकार के बिकने वाले नशे के उत्पाद पर लिखा होता है - "वैधानिक चेतावनी- शराब या तम्बाकू का उपयोग जानलेवा हो सकता है।" तो क्या आगे, आने वाले दिनों में ऑन स्क्रीन ये लिखा देखा जा सकता कि - "वैधानिक चेतावनी- अत्यधिक स्क्रीन टाइम हमारे लिए बेहद खतरनाक हो सकता है?"

हाल के वर्षों में, यह चिंता बढ़ रही है कि स्क्रीन टाइम बच्चों और युवाओं के मानसिक स्वास्थ्य को नुकसान पहुंचा रहा है। उनके सोचने, बात-करने, उठने-बैठने, के अलावा उनके व्यक्तिगत और पारिवारिक जीवन को कितना प्रभावित कर रहा है! हर बार, व्यापक रूप से अध्ययन भी सामने भी आ रहे हैं जो चिंताजनक हैं- उदाहरण के लिए, डर, हीनभावना, अवसाद, आत्म-नुकसान, आत्महत्या और नाखुशी। ये सभी बीमारी 2012 के बाद युवा किशोर विशेष रूप से लड़कियों और युवा महिलाओं में नाटकीय रूप से बढ़े हैं। यह अध्ययन स्पष्ट रूप से सोक्षल मीडिया के उदय से इन बीमारियों को जोड़ता है।

ऐसे में सवाल बन जाता है कि क्या स्मार्टफ़ोन पर स्क्रीन टाइम ने हमारी एक पीढ़ी को नष्ट कर दिया है? क्योंकि संडे टाइम्स की एक रिपोर्ट से पता चलता है- कि किशोर आत्महत्याओं में वृद्धि के पीछे सोशल मीडिया है। 2018 में, तत्कालीन स्वास्थ्य सचिव, मैट हैनकॉक ने भी सोशल मीडिया के जोखिम की तुलना एक महामारी के रूप में की थी। क्योंकि इसकी लत के रोगी खुद को सामान्य समझते हैं। लेकिन वो

.....संडे टाइम्स की एक रिपोर्ट से पता चलता है- कि किशोर आत्महत्याओं में वृद्धि के पीछे सोशल मीडिया है। 2018 में, तत्कालीन स्वास्थ्य सचिव, मैट हैनकॉक ने भी सोशल मीडिया के जोखिम की तुलना एक महामारी के रूप में की थी। क्योंकि इसकी लत के रोगी खुद को सामान्य समझते हैं। लेकिन वो अंदरूनी तौर पर मानसिक रूप से बेहद कमजोर हो चुके होते हैं।

कारण आज स्क्रीन पर भय, व्यंग, सेक्स, अश्लीलता बहुत कुछ जंगल में जानवरों की तरह खुला घूम रहा है, एक इन्सान को राष्ट्र, धर्म या फिर उसकी जातीय-नस्लीय पहचान नष्ट न हो, के रूप में डराया भी जा रहा है। राजनितिक दल, सामाजिक संगठन, धार्मिक संगठन उसके डर का बखूबी इस्तेमाल भी कर रहे हैं। अच्छे और बुरे व्यंग भी स्क्रीन पर उपलब्ध हैं। साथ ही सेक्स की विधि से लेकर कामुक सामग्री भी यहाँ प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है। .....

अंदरूनी तौर पर मानसिक रूप से बेहद कमजोर हो चुके होते हैं।

कारण आज स्क्रीन पर भय, व्यंग, सेक्स, अश्लीलता बहुत कुछ जंगल में जानवरों की तरह खुला घूम रहा है, एक इन्सान को राष्ट्र, धर्म या फिर उसकी जातीय-नस्लीय पहचान नष्ट न हो, के रूप में डराया भी जा रहा है। राजनितिक दल, सामाजिक संगठन, धार्मिक संगठन उसके डर का बखूबी इस्तेमाल भी कर रहे हैं। अच्छे और बुरे व्यंग भी स्क्रीन पर उपलब्ध हैं। साथ ही सेक्स की विधि से लेकर कामुक सामग्री भी यहाँ प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है।

उदहारण हेतु जब आप लाइब्रेरी में जाकर कुछ पढने के बारे सोचते हैं तो ये आपके हाथ में है कि आज आपको क्या पढ़ना है! साहित्य या इतिहास की कोई पुस्तक, विज्ञान, भूगोल या फिर प्रेम पर आधारित कोई रोमांटिक स्टोरी! लेकिन स्क्रीन की दुनिया में ऐसा कुछ नहीं है। यहाँ जब कोई व्यक्ति, युवा, बच्चा, महिला या पुरुष मोबाइल की स्क्रीन को स्क्रोल करता है, उसके सामने अगला सीन क्या होगा- वो इसका खुद चुनाव नहीं कर सकता! वो सिर्फ स्क्रोल करता है, सामग्री अपने आप उसके सामने आ रही है।

- शेष पृष्ठ 7 पर

बाल बोध

विद्यार्थियों के लिए पांच उपयोगी सूत्र

.....विद्यार्थियों के व्यवहार में विनम्रता होनी चाहिए, सद्भाव होना चाहिए, प्रेम होना चाहिए। जैसा व्यवहार आप अपने लिए नहीं चाहते वैसा दूसरों के साथ न करें, सदा अपने बड़ों का सम्मान करें, अपने गुरुजनों को विनम्र भाव से प्रसन्न रखें, घर में, क्लास में, समाज में, सम्बन्धें में मधुरता का व्यवहार करें। कभी किसी के बहकाने से, भड़काने से, चिढ़ाने से कोई ऐसा कार्य न करें जो जीवन का कलंक बन जाए। .....

व्यक्तित्व विकास के लिए जितना शिक्षा को जरूरी माना गया है, उससे ज्यादा संस्कारों को महत्व दिया गया है, उत्तम विचारों की अनिवार्यता बताई गई है, धर्मानुकूल आचरण को अपरिहार्य माना गया है, प्रेम और सद्भावना को स्थान दिया गया है। उपरोक्त सभी शुभ लक्षणों के बिना अगर कोई व्यक्ति शिक्षित होकर सफल हो भी जाए, फिर भी वह जीवन की जंग में असफल ही माना जाएगा। क्योंकि वह सफलता पाकर भी उद्विग्न और बेचैन ही रहेगा। शांति, संतोष और आनन्द उससे कोसों दूर रहेगा। संस्कृत साहित्य के एक श्लोक में विद्यार्थी जीवन के समुचित विकास के लिए पांच सूत्र बताए गए हैं।

वस्त्रेण वपुषा वाचा विद्यया
विनयेन च।
वकारै पञ्चभिर्युक्तः नरो
भवति पूजितः।।

(१) वस्त्रेण– व्यक्तित्व विकास में प्रथम वस्त्र शुद्ध और सात्विक हों। क्योंकि वस्त्रों का भी मन पर प्रभाव पड़ता है। आजकल विद्यार्थियों की पोषाक मानवीय नहीं लगती। फैसन के नाम पर आधे-अधूरे वस्त्र पहनना बेढंगा शौक-सा बन गया है, जिसको कभी-भी किसी भी स्थिति में उचित नहीं माना जाएगा। स्कूलों में वेश-भूषा निश्चित होती है, बच्चे पहनते हैं, लेकिन जैसे ही वे इस नियम से आजाद होते हैं तो विश्व विद्यालयों में एक से बढ़कर एक भड़कीले, चमकीले, छोटे, स्टाईलिश, फिट और भद्दे वस्त्रों को पहनने के बिना आयोजित की हुई प्रतियोगिता में प्रतिभागी बन जाते हैं। जो कि केवल अशोभनीय ही नहीं बल्कि व्यक्तित्व विकास में बाधक है।

(२) वपुषा– शरीर की नीरोगता, सुंदरता और सुडौलता का ध्यान अवश्य रखना चाहिए। कुछ विद्यार्थी जो पढ़ने-लिखने में बहुत तेज होते हैं लेकिन शरीर से इतने दुबले-पतले होते हैं कि जैसे किसी कंकाल को वस्त्रों से ढंक दिया गया हो। अतः विद्यार्थी का शरीर नीरोग हो, सुंदर हो, सुडौल हो इसके लिए सदा सचेत रहना चाहिए। आहार और आचरण गुरुकुलीय ब्रह्मचारियों जैसा होना चाहिए। विद्यार्थियों को फास्टफूड, मिर्च-मसालों में, घने तेल में तली-भुनी चीजों को त्याग कर फल-दूध, हरी सब्जियां, जूस आदि प्रयोग करने का मन में शौक पैदा करना चाहिए।

(३) वाचा – वाणी की मधुरता, सरसता, सरलता से कहीं हद तक व्यक्ति के व्यक्तित्व की पहचान हो जाती है। वाणी ही इंसान को ऊंचाइयों पर बैठाती है और इसके विपरीत नीचे गिराने में भी देर नहीं लगाती। वाणी से निकला हुआ शब्द सारगर्भित होना चाहिए, उचित होना चाहिए, ज्यादा बोलने से विद्यार्थी को सदा बचना चाहिए, प्रत्येक अनावश्यक बात का जवाब देना उचित नहीं समझना चाहिए। अगर कोई गलत बात का समर्थन अथवा आंसर चाहता हो तो ''नो कमेंट'' कह देना सबसे अच्छा उत्तर हो सकता है। वाणी में कड़वाहट न आए, इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए।

(४) विद्या – विद्यार्थी को विद्या अर्जन में कभी भी आलस्य प्रमाद नहीं करना चाहिए। जिस समय शिक्षक पढ़ाएं तो उस समय ध्यानपूर्वक उसे अपने दिमाग में स्टोर करना चाहिए और बाद में उसे रिवाईज करके सदा के लिए अपने विद्याकोष में संग्रहीत करना चाहिए। जैसे गऊ जब चारा ग्रहण करती है तो डण्डे से मारने पर भी नहीं हटती, भागते-भागते भी खाती जाती है और बाद में एकान्त में उसे जुगाली करके चबाती है, पचाती है। विद्यारूपी परमधन को संग्रह करने के लिए विद्यार्थी को सदा तत्पर रहना चाहिए।

(५) विनयेन – विद्यार्थियों के व्यवहार में विनम्रता होनी चाहिए, सद्भाव होना चाहिए, प्रेम होना चाहिए। आप ऐसे भी समझ सकते हैं कि जैसा व्यवहार आप अपने लिए नहीं चाहते वैसा दूसरों के साथ न करें, सदा अपने बड़ों का सम्मान करें, अपने गुरुजनों को विनम्र भाव से प्रसन्न रखें, घर में, क्लास में, समाज में, सम्बन्धों में मधुरता का व्यवहार करें। कभी किसी के बहकाने से, भड़काने से, चिढ़ाने से कोई ऐसा कार्य न करें जो जीवन का कलंक बन जाए। आजकल विद्यार्थीकाल में ही कुछ ऐसे षड्यंत्रों में भोले-भाले बच्चों को फंसा दिया जाता है कि वे बाद में लाख कोशिशों के बाद भी उस दलदल से मुक्त नहीं हो पाते। अतः सावधान होकर व्यवहार करें, व्यवहार निभाएं और एक निखरे हुए व्यक्तित्व के रूप में आदर्श प्रस्तुत करें।

श्लोक की अंतिम पंक्तियों में कहा गया है कि ये पांच वकारों से युक्त व्यक्ति अपने गुण, कर्म और स्वभाव के बलबूते पर विख्यात हो जाता है, सफल हो जाता है, आदर्श बन जाता। बच्चों से आपेक्षित है कि वे अपने विद्यार्थी जीवन में इन तथ्यों पर अवश्य चिंतन करें।

स्वास्थ्य सन्देश

उत्तम स्वास्थ्य के सूत्र एवं रोगों से बचाव

आर्य संदेश के इस अंक में स्वास्थ्य रक्षा स्तंभ में हम आपको बता रहे हैं कुछ वे उपयोगी प्रचीन नुस्खे जिनको अपनाकर आप जटिल बीमारियों से स्वयं को ओर अपने परिवार स्वस्थ रख सकते हैं। लेकिन हम यहां पर यह अवश्य स्पस्ट करना चाहते हैं कि ये पुराने वैद्यों द्वारा प्रचलित घरेलू नुस्खे हैं, अतः अगर किसी को कोई खतरनाक बीमारी हो तो कृपया अपने चिकित्सक का परामर्श और उपचार ही प्रयोग में लाएं और स्वस्थ रहें। - सम्पादक

खांसी

1. मिश्रि 50ग्राम, मुलेठी 100ग्राम, काली मिर्च 20 ग्राम, तीनों को पीसकर आधा चम्मच भोजन के बाद चूसें।

2. अदरक का रस + शहद 1 चम्मच सामान्य गर्म करके दिन में 3 बार भोजन के बाद लेने से (बलगम हेतु) नजला, जुकाम, दमा, आदि में उपयोगी।

3. सूखी खांसी - पान पत्ता + अजवायन रखकर चबा-चबा रस निगलने से आराम मिलता है।

बलगम हेतु - सूखा आंवला+ मुलेठी अलग-अलग चूर्ण बनाकर मिलाकर रखें सुबह-शाम खाली पेट 15 दिन तक सेवन करें। 4. टंकन भस्म और शहद चाटें।

मोतियाबिंद

1. पुनर्नावा की जड़ को गुलाब जल के साथ रगड़कर काजल की तरह लगावें।

2. गाजर रस 310 ग्राम + पालक रस 125 ग्राम मिलाकर पीने से मोतियाबिंद दूर होता है।

3. सुबह शाम 1 गिलास गाजर का रस पीने से मोतियाबिंद में लाभ होता है।

4. बरगद का दुध 2-2 बूंद आंखों पर लगावें प्रातः।

5. शुद्ध शहद आंखों में रात्रि में सोते समय लगावें या दिव्य दृष्टि ड्रॉप डालें।।

6. सूखा धनिया और सौंफ + मिश्री 4-4 ग्राम बराबर पावडर बनाकर सुबह-शाम जल से सेवन करें।

7. अंकुरित गेहूँ और अंकुरित चना खाने से विशेष लाभ होता है।

8. सफेद प्याज का रस और शहद 1 अनुपात 2 की मात्रा में गुलाब जल में मिलायें और आंखों में डालने से मोतियाबिंद दूर होता है।

9. प्रातः तीन-चार कच्चा लहसुन+ पानी के साथ लेवें।

10. प्रातः उठते ही बासीलार आँखों में लगावें।

एक्युप्रेशर- आंख, लीवर, हृदय, हार्ट, पेट पाइंट दबावें।

आसन- सर्पासन, सर्वांगासन, अर्ध मत्स्येन्द्रासन, मयूरासन,।

प्राणायाम - अनुलोम - विलोम, कपालभाति, भ्रामरी, सिंहमुद्रा। खटाई, चीनी, मैदा का सेवन निषेध। गुड़, सोंठ, काली मिर्च, अजवायन 3ग्राम + 1 ग्राम काला नमक+गुड़ काढ़ा पीवें।

गांठ-

1. सिरस के बीच अर्बुज और गांठ को गलाने में लाजवाब है।

2. तेल का लेप करें, तिल अधिक होने पर लगावें।

3. प्रतिदिन 1 ग्राम खाने के चूने का प्रयोग करें-अजवायन 3 ग्राम + 1 ग्राम गुड- काढ़ा पियें।

4. कैल्शियम युक्त भोजन खावें- धनिया, पालक, अखरोट, केला, चूना पानी आदि।

सुख समृद्धि हेतु यज्ञ कराएं

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की योजना 'घर-घर-यज्ञ, हर-घर-यज्ञ' राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में उत्साह पूर्वक नित्य निरंतर प्रगति की ओर है। वैदिक वाङ्मय में यज्ञ की विशेष महत्ता का वर्णन मिलता है। यज्ञ के द्वारा संसार के सभी ऐश्वर्य मानव को प्राप्त होते हैं। यजुर्वेद में कहा गया है कि 'अयं यज्ञो भुवनस्य नाभिः' अर्थात् यह यज्ञ संसार का केन्द्र बिन्दु है, अर्थात् विश्व का आधार है। शतपथ ब्राह्मण में कथन है कि 'स्वर्ग कामो यजेत्' अर्थात् हे मनुष्य यदि तू संसार के सुख प्राप्त करना चाहता है तो यज्ञ कर। आप भी अपने घर-परिवार में यज्ञ कराने के लिए सम्पर्क करें। यदि परमात्मा की व्यवस्थानुसार आपका परिजन/ परिचित मृत्यु को प्राप्त होता है, उसके अन्तिम संस्कार की व्यवस्था हेतु भी आप सम्पर्क कर सकते हैं।- ***9650183335***

-: खेद व्यक्त :-

खेद है कि प्रिंटिंग मशीन (प्रैस) में गड़बड़ी आ जाने के कारण साप्ताहिक आर्यसन्देश का गत अंक वर्ष 45 अंक सं. 24 सोमवार दिनांक 11 अप्रैल, 2022 से रविवार 24 अप्रैल, 2022 प्रकाशित नहीं हो सका। पाठकों को हुई असुविधा के लिए सम्पादक मंडल खेद व्यक्त करता है।

- सम्पादक

विदेश समाचार

आर्य दिवाकर सूरीनाम पहुंचे भारतीय राजदूत महामहिम श्री शंकर बालचन्द्रन ने किया आह्वान

मातृभाषा हिन्दी को स्कूलों में विषय के रूप में पढ़ें और घर पर भी प्रयोग करें ताकि आने वाली पीढ़ी इसे न भूले

विश्वव्यापी आर्य समाज के संगठन में सूरीनाम का अपना स्थान है। वहां के सम्मानित अधिकारी, कार्यकर्ता और सदस्य हमेशा वैदिक पर्व पूरे विधि-विधान से मनाते हैं। मानवसेवा और राष्ट्र निर्माण में सहयोग देते हैं। अभी पिछले दिनों 10 अप्रैल, 2022 को रामनवमी के अवसर पर सूरीनाम में भारत के राजदूत महामहिम श्री शंकर बालचंद्रन जी आर्य समाज के 148वें स्थापना दिवस पर आयोजित भव्य समारोह में सम्मिलित हुए। इस अवसर पर उन्होंने पारामारिबो में स्थित सूरीनाम के मुख्य आर्य समाज मंदिर का निरीक्षण भी किया और यज्ञ और आरती में भाग लिया।

उन्होंने आर्यसमाज के अध्यक्ष श्री इन्द्र गंगा बिशन सिंह जी के साथ हिन्दी में आर्यसमाज मन्दिर के नामपट्ट (बोर्ड) का अनावरण किया।

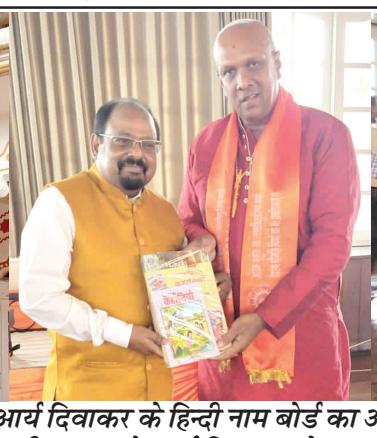

इस अवसर पर श्री गंगा बिशन सिंह जी ने सभी को आर्य समाज के स्थापना दिवस की बधाई देते हुए कहा कि आर्य समाज अपने कई उद्देश्य जैसे महिलाओं के लिए शिक्षा आदि में तो सफलता प्राप्त की है, लेकिन हिन्दी भाषा सूरीनाम के मंदिरों से निकलकर सार्वजनिक स्थानों तक नहीं पहुंच पाई है, इसका हमें खेद है। राजदूत श्री शंकर बालचन्द्रन ने गायत्री मंत्र में निहित प्रार्थना और बृहदारण्यक उपनिषद के एक श्लोक की चर्चा करते हुए कहा कि आज सार्वजनिक दृष्टि से हिन्दी में नामबोर्ड का अनावरण सूरीनामी हिदुस्तानियों के लिए जागृति का दिन है और एक आंदोलन की शुरुआत भी है। उन्होंने सूरीनामी हिदुस्तानियों से 2023, 2024 और 2025 के वर्षों को याद रखने की बात करते हुए कहा कि सूरीनाम में भारतीयों के आगमन के 150 वर्ष, महर्षि दयानंद सरस्वती की 200वीं जयंती और आर्यसमाज की स्थापना के 150वीं वर्षगांठ हैं। उन्होंने हिन्दी के प्रचार हेतु अपील करते हुए कहा कि वे अपनी मातृभाषा हिन्दी को स्कूलों में विषय के रूप में पढ़ें और घर पर भी प्रयोग करें ताकि आने वाली पीढ़ी इसे भूले नहीं। उन्होंने हिन्दी शिक्षा को मातृभाषा संवर्धन और प्रचार-प्रसार के रूप में शिक्षकों के प्रशिक्षण, पाठ्य पुस्तकों हेतु भारत सरकार से अनुदान के साथ सहयोग देने की पेशकश की। फिर उन्होंने सभी को रामनवमी की बधाई दी।

सूरीनाम के मुख्य आर्यमामज मन्दिर आर्य दिवाकर के हिन्दी नाम बोर्ड का अनावरण करते महामहिम राजदूत श्री शंकर बालचन्द्रन। दूतावास की ओर से भेंट किए गए हिन्दी साहित्य स्वीकार करते आर्य दिवाकर के प्रधान श्री इन्द्र गंगा बिशन सिंह जी एवं आर्य दिवाकर के अधिकारीगण।

आर्य दिवाकर सूरीनाम का भव्य भवन जिसे सूरीनाम का ताजमहल भी कहा जाता है।

इस अवसर पर आर्य समाज सूरीनाम अध्यक्ष के ने उन्हें 1929 से 2019 तक संगठन के 90 वर्ष के इतिहास पर पुस्तक भेंट की। दूतावास की ओर से आर्य दिवाकर को भारतीय नायकों, कहानियों और भारतीय महाकाव्यों की लघु कथाओं पर हिन्दी में पुस्तकों का सैट भेंट दिया।

आर्य दिवाकर के पूर्व प्रधान पंडित तिलकधारी ने इस अवसर पर भारत रत्न महामना पंडित मदन मोहन मालवीय की आर्य समाज के साथ घनिष्ठता से कार्य करने की भूमिका को याद किया।

आर्यसमाज शादी खामपुर में नौ दिवसीय सुख शांति व समृद्धि महायज्ञ व श्रीराम कथा

आर्यसमाज शादीपुर खामपुर की ओर से शादीपुर गाँव में नवरात्र व रामनवमी के पावन अवसर पर 'दादा भूमिया मन्दिर' छोटी चौपाल में नौ दिन (2 अप्रैल से 10 अप्रैल तक) सभी के परिवार की सुख शांति व समृद्धि के लिए "सुख समृद्धि महायज्ञ व श्रीराम कथा" का आयोजन हुआ। सभी क्षेत्रवासियों के सहयोग से यह आयोजन सफल रहा। प्रसिद्ध आर्य विद्वान आचार्य शिवा चतुर्वेदी जी ने श्री राम जी के जीवन के विभिन्न प्रसंगों को बडे सरल ढंग से कथा व भजनों के माध्यम से अपनी टीम के साथ उपस्थित श्रोताओं को सुनाया। रविवार 10 अप्रैल को महायज्ञ की पूर्णाहुति हुई।श्री राम कथा में श्री राम का राज्याभिषेक हुआ। राम नवमी के अवसर पर मंगल गीत गाए। बच्चे राम जी के वेश मे आए। विद्वानों का सम्मान हुआ। सभी ने प्रसाद (भंडारा) ग्रहण किया।

इस अवसर पर आर्यसमाज शादीपुर खामपुर के प्रधान श्री भीमसेन कामराह, मंत्री श्री कृपाल सिंह, कोषाध्यक्ष श्री जोगेन्दर सिंह रोहिल्ला, श्री संजय चौहान, श्री यशवन्त सिंह, श्रीमती अमृत देवी, करोलबाग जोन के चेयरमैन व स्थानीय निगम पार्षद श्री तेजराम फौर, शादीपुर गाँव से श्री सुभाष यादव, प्रशांत यादव, श्री किशोरी लाल गौड, श्री विवेक सिंह फौर, श्री मुकेन्दर सिंह , श्री अतुल गौड, श्री संजय गर्ग, श्री जसविन्दर सिंह नरेला व अन्य लोग उपस्थित रहे।

- मन्त्री

8 दिवसीय गायत्री महायज्ञ सम्पन्न

आर्य समाज ग्रुप हाउसिंग विकास पुरी नई दिल्ली-110018 द्वारा एफ-79 के सामने पार्क में 2 अप्रैल से 9 अप्रैल 2022 तक नवसंवत्सर, नवरात्र और रामनवमी के उपलक्ष्य में आठ दिवसीय गायत्री महायज्ञ सम्पन्न हआ। इस अवसर पर प्रतिदिन शाम 4 बजे से 6 बजे तक यज्ञ, भजन, सत्संग में आस-पास के सैंकड़ों लोगों ने भाग लिया। यज्ञ में श्री विश्व बंधु शास्त्री, आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री एवं आचार्य गवेन्द्र शास्त्री ने यज्ञ प्रवचन किए। समापन समारोह 9 अप्रैल को किया गया जिसमें श्रीमती शकुंतला जुनेजा जी, श्रीमती उषा महाजन जी आदि ने कार्यकर्ताओं को श्रीफल देकर सम्मानित किया। जलपान और धन्यवाद के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। *- मन्त्री*

श्री रामनवमी के अवसर पर असम आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यालय महर्षि दयानन्द सरस्वती भवन का लोकार्पण

असम के महामहिम राज्यपाल प्रो. जगदीश मुखी जी हुए मुख्य यजमान के रूप में सपत्नीक सम्मिलित

राम नवमी (चैत्र शुक्ल नवमी) वि. सं. 2079 दिनांक 10 अप्रैल 2022 के शुभ अवसर पर असम आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यालय भवन में रामनवमी के अवसर पर सभा के मुख्य कार्यालय भवन का लोकार्पण किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ प्रात: 10.30 बजे यज्ञ के साथ हुआ। असम प्रदेश के माननीय राज्यपाल प्रो. जगदीश मुखी जी मुख्य अतिथि के रूप में कार्यक्रम की शोभा बढ़ाने पधारे। उनके साथ उनकी धर्मपत्नी श्रीमती प्रेम मुखी जी भी थीं। सभा के मुख्य कार्यालय भवन का नाम "महर्षि दयानन्द सरस्वती भवन" रखा गया है। भवन का लोकार्पण माननीय राज्यपाल जी के कर कमलों द्वारा वेद मंत्रों के उच्चारण के साथ किया गया। कार्यक्रम में असम आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारी एवं सदस्यों के साथ-साथ गुवाहाटी के अनेक आर्यसमाजों के कार्यकर्ताओं, सदस्यों तथा शुभाकांक्षियों ने भी भाग लिया।

आर्य प्रतिनिधि सभा कोटा सम्भाग ने किया डीसीएम श्रीराम के अधिकारी श्री वीनू मेहता को सम्मानित

डी.सी.एम. श्रीराम ने कोरोना काल में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा सहित कई आर्य संस्थानों को सैनिटाइजेशन हेतु नि:शुल्क प्रदान किया हाइप्रोक्लोराइड

महान परोपकारी संगठन है-आर्य समाज - वीनू मेहता, कार्यकारी निदेशक, डी.सी.एम. श्रीराम

आर्य प्रतिनिधि सभा कोटा संभाग के प्रधान श्रीअर्जुन देव चड्ढा के नेतृत्व में आर्य समाज के प्रतिनिधिमंडल वरिष्ट मंत्री श्री चन्द्र मोहन, श्री अग्निमित्र शास्त्री आदि ने डीसीएम गेस्ट हाउस पहुंचकर वीनु मेहता से मुलाकात की। इस अवसर पर डीसीएम गेस्ट हाउस मे आर्य समाज के प्रतिनिधियों ने संभागीय प्रधान की अगुवाई में वैदिक मंत्रोच्चार पूर्वक अभिनंदन किया। श्री वीनू मेहता जी की मानव सेवा की भावना, कामना को सम्मान देते हुए केसरिया साफा, गायत्री मंत्र से सुसज्जित पटका, मोतियों की माला व शाल ओढ़ाकर स्वागत किया साथ ही सिल्वर कोटेड यज्ञपात्र सेट का स्मृति चिन्ह व आकर्षक श्रीफल भेंट किया।

श्री मेहता जी द्वारा कोरोना काल में की गई सेवाओं का वर्णन करते हुए श्री चड्ढा जी ने उन्हें बधाई और शुभकामनाएं दी। आर्य समाज के प्रतिनिधिमंडल को सम्बोधित करते हुए श्री वीनू मेहता ने कहा कि आर्य समाज के परोपकारी, सामाजिक जागरूकता व आध्यात्मिक कार्य सभी के लिए प्रेरणादायक है। मुझे अत्यंत खुशी है की कोरोना के इस भयावह माहौल में आर्य समाज द्वारा सेवा सहायता के प्रशंसनीय कार्य किए गए जिसमें वातावरण को कोरोना मुक्त करने के लिए घर-घर यज्ञ - हर घर यज्ञ और और यज्ञ आपके द्वार का जो अभियान चलाया गया। जिसके माध्यम से लोगों को जागरूक करने तथा वातावरण को शुद्ध करने का जो कार्य किया गया उसमें आर्य समाज के साथ कंधे से कंधा मिलाते हुए वातावरण को वायरस मुक्त करने के लिए डीसीएम प्रबंधन द्वारा जो हाइपोक्लोराइट का घोल उपलब्ध कराकर अपने कर्तव्य का निर्वहन किया है। वर्तमान में भी डीसीएम द्वारा कोटा जिले में 1070 से अधिक विद्यालयों में आधुनिक सुविधाओं से युक्त शौचालय का निर्माण कराया जा रहा है।

शिष्टाचार भेंट के इस अवसर पर आर्य समाज के वैदिक विद्वान आचार्य अग्निमित्र शास्त्री वेद विदुषी डॉ. सुदेश आहूजा आर्य समाज जिला सभा के वरिष्ठ मंत्री एडवोकेट चंद्र मोहन कुशवाहा आर्य समाज महावीर नगर के मंत्री राधावल्लभ राठौर युवा सदस्य किशन आर्य हरियाणा नरेन्द्र शर्मा महिला सदस्य श्रीमती विमलेश आर्या आर्य समाज खेड़ा रसूलपुर के प्रधान राम नारायण कुशवाह मंत्री कैलाश नामा पूर्व मंत्री बंशीलाल रेनवाल आर्य समाज तलवंडी के कोषाध्यक्ष मनु सक्सेना, पूर्व प्रधाना सुमन बाला सक्सेना सदस्य दिव्या सक्सेना आर्य समाज अंजलि विहार के संरक्षक राजेंद्र मुनि आर्य, आर्य समाज विज्ञान नगर के वरिष्ठ उप प्रधान पंडित श्योराज वशिष्ठ, प्रधाना उषाआर्या,आर्य समाज गायत्री विहार के मंत्री उमेश कुर्मी महिला सदस्य सुशीला कुर्मी।

आर्यसमाज तिलक नगर की पूर्व महिला प्रधाना कौशल्या तापड़िया आर्य तथा आर्यपुत्र एवं कोट के समाजसेवी डॉ वेद प्रकाश गुप्ता, समाजसेवी यादवेंद्र तोड़ड समाजसेवी शम्मी कपूर एवं दीपा कपूर महर्षि दयानंद सेवा समिति कोटा के मंत्री राकेश चड्ढा उपस्थित रहे।

कार्यक्रम का संचालन चंद्र मोहन कुशवाहा के द्वारा किया गया शांति पाठ के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ। कार्यक्रम के पश्चात सभी के लिए अल्पाहार की व्यवस्था डीसीएम गेस्ट हाउस में की गई।

- अर्जुनदेव चड्डा, प्रधान

वैदिक एवं आधुनिक विज्ञान महोत्सव के अवसर पर आर्यावर्त शोध संस्थान का शिलान्यास

सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र आर्य, सांसद डॉ. सत्यपाल सिंह, स्वामी विदेह योगी, श्री दीनदयाल गुप्त, आचार्य अग्निव्रत जी के करकमलों से हुआ संस्थान का शिलान्यास

दिनांक 8 से 10 अप्रैल को सिरोही जिला राजस्थान में पूज्य आचार्य अग्निव्रत जी के नेतृत्व में वैदिक स्वस्ति पन्था न्यास एवं वैदिक भौतिकी परिवार की ओर से वैदिक एवं आधुनिक विज्ञान महोत्सव सम्पन्न हुआ। दिनांक 10 अप्रैल दिन रविवार को प्रात: पूज्य स्वामी विदेह योगी जी के ब्रह्मत्व में यज्ञ उपरांत "आर्यावर्त शोध संस्थान" का शिलान्यास सम्पन्न हुआ। यह संस्थान भारत के नालंदा व तक्षशिला के समान वर्तमान में विद्वानों, शोधकर्ताओं, क्रांतिकारियों एवं ब्रह्मचारियों को तैयार करेगा। जैसे कभी आचार्य चाणक्य के सानिध्य में तक्षशिला से शिक्षा प्राप्त कर चन्द्रगुप्त मौर्य महान शासक बने थे उसी प्रकार पूज्य आचार्य अग्निव्रत जी के सानिध्य में इस शोध संस्थान से अनेको कुशल प्रशासक वर्ग का भी निर्माण होगा।

डॉ. सत्यपाल सिंह जी ने कहा कि भारतीय परम्परा में गुरुकुल सदैव क्रांति का आधार रहे हैं। भविष्य में "आर्यावर्त शोध संस्थान" भी महान क्रांति का आधार बन कर उभरेगा जो युवाओं को शिक्षित व संस्कारित कर राष्ट्रोन्नति एवं वैश्विक शांति स्थापित करने का कार्य करेगा।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र आर्य जी ने वैदिक स्वस्ति पंथा न्यास एवं वैदिक भौतिक परिवार के समस्त सदस्यों का हृदय से धन्यवाद करते हुए कहा कि यह शोध संस्थान वैदिक ज्ञानधारा को जन-जन तक पहुंचाने में विशेष कार्य करेगा।

इस अवसर पर प्रतिदिन यज्ञ आचार्या सूर्यादेवी चतुर्वेदा जी के ब्रह्मत्व में यज्ञ का आयोजन हुआ। विभिन्न सम्मेलनों में आचार्या मधुलिका, उपाचार्य अग्नियश वेदार्थी, डॉ. भूपसिंह, डॉ. राम गोपाल , डॉ. शिवदर्शन मलिक, आदि अनेक वक्ताओं के उद्बोधन प्राप्त हुए।

- आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक

Continue From Last issue

Vidya and Moksha

9th Chapter

Vidya-Avidya

'Avidya', i.e. non-knowledgeable, is another name of 'indulgence in actions, particularly the bad ones. With the help of this type of knowledge, we can refrain from doing such actions and, thus, can leave aside the fear of death, or swim across it. Vidya, on the other hand, is the knowledge of reality and, thus, the means to gain salvation, through absolvement from indulgence in actions. The Philosophy of Yoga defines Avidya as: 'To treat and indulge in perishable, impure, sorrow-producing and soul-less things, though they are eternal, pure, pleasure- giving and having souls, is known Avidya! By sticking to the path of Avidya, one becomes devoid of true knowledge and, thus, leaves the path of righteousness. He cannot attain Moksha or Salvation.

Bandha and Moksha

Bandha and Moksha, i.e. Binding and Salvation, are not natural, as they are the results of some causes. As the Souls know little, according to their nature, they come into an embryo, take birth, accept the binding of results of their own actions, try to absolve themselves from them, as also try to reach the Supreme Reality, which is ever- joyous. Only after realising Him, the soul becomes absolved or Mukta.

To say, that Jivatma itself is Brahma, is a lie, because in that case that should also have the same attributes of 'formlessness', 'omnipresence'. etc. Instead, he has res- trictive features of Antah karna, Mind, etc. Therefore these two are different and separate entities. The Omni- present Brahma cannot become 'limited' or 'covered' as also He cannot have attributes of A vidya and Binding. These are the attributes of Jivatma which belong to a limited region, is devoid of knowldge, and is circumscribed.

Mukti or Salvation means absolvement from the sorrows and griefs. This state can be attained, by abiding to the God's biddings ; by abstaining from Avidya, bad associations, habits, etc., by keeping to the righteous path; by making proper prayers, etc., to the God, as also by practising regularly in the Yogic exercises, engaging in studies, and labouring righteously. Without following this path, and by acting adversely, one gets into 'Bondage'.

During Salvation:

After getting salvation, a Jiva remains within Brahma, and due to His omnipresence can wander within Him unhindered, always having Real Knowledge and feeling supreme joy. Even in this state, he has the attributes of Truth, Desire, Intent, etc. Whatever he desires, he can enjoy with his 'intent' and 'will' only. Such powers, as remain within Jiva without salvation, are thought to be twentyfour ; such as: Strength, Valiance, Attraction, Inspiration, Movement, etc. Even after leaving them aside; during salvation, he can still enjoy pleasures. Thus Mukti or Salvation does not mean to become Brahmah itself. instead it is to enjoy the pleasures while remaining within. the omnipresent and ever joyous God.

After Salvation:

Souls enter body again, after Salvation. The period of salvation is equal to the period, during which this creation is created and destroyed or dissolved 3600 times, and is called as 'Mahakalpa'. Even after knowing the truth that one has to return to the 'life' again one must try to attain salvation in the same way as one tries for a longer life" though he knows that ultimately he has to die.

Four such means of attaining salvation are as follows :. (i) Satsanga : through which one knows from the knowledgeables about the Five stages of 'ascendence', i.e. 'Annamaya, Pranamaya, etc, ; Three stages of A wakening, Sleeping and Slumber or Sushupti ; and four kinds of minute' body ; (2) Vairagya : which means adopting the righteous path by knowing all the aforesaid things; (3) Sixfold Treasure: Which is Calillness, restraint, etc ; and (4) Abandoning of all desires other than Mukti or Salvation.

All this is done for attaining supreme pleasure and absolvement from the sorrows. For this one must follow a. four-fold path of Listening, Thinking, Concentrating and Realisation. Such an attempt he has to make during several 'lives'. 'Swarga' also means, the 'state of pleasure', which is attained only after absolving oneself from the bondage of birth, etc., in several attempts.

To be continued.....

With thanks : "Flash of Truth"

by Satyakam Verma :
Abridged form of
'Satyarth Prakash' by
Maharishi Dayanand Saraswati

निःशुल्क सत्यार्थ प्रकाश वितरण योजना

आइए, सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार-प्रसार को मिलकर करें गति प्रदान

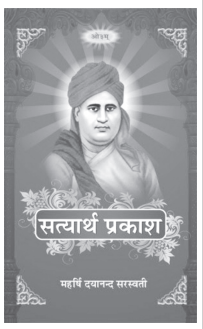

मानव समाज को सन्मार्ग दिखाने वाले महर्षि देव दयानन्द जी द्वारा रचित सत्यार्थ प्रकाश उनकी विशेष रचनाओं में से एक प्रमुख रचना है। सत्यार्थ प्रकाश को पढ़कर लाखों लोगों के जीवन प्रकाशित हुए हैं। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने सत्यार्थ प्रकाश को जन-जन तक पहुंचाने का संकल्प धारण किया हुआ है। इस लोकोपकारी कार्य के लिए सभा ने स्थाई निधि की योजना बनाई है। जिसके ब्याज से प्रकाशित सत्यार्थ प्रकाश लगातार विश्व की संस्थाओं में भेजे जाते हैं। सभा के प्रयास और आप सबके सहयोग से सत्यार्थ प्रकाश भारत के समस्त महत्वपूर्ण संस्थानों में, पुस्तकालयों में तथा सभी दूतावासों में, स्कूल-कालेजों में लगातार पहुंचाए जा रहे हैं। इस महान कार्य में हमें निरंतर सफलता मिल रही है।

सभा का प्रयास है कि सत्यार्थ प्रकाश भारत के 135 करोड़ नागरिकों के हाथों में पहुंचे तथा विश्व के 700 करोड़ से ज्यादा लोगों के जीवन स्वामी दयानंद जी की इस अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश से प्रकाशित हों। आइए, सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार-प्रसार को मिलकर गति प्रदान करें।

- ⋆ इसके लिए आप अपने आर्यसमाज की ओर से या संस्था की ओर से अथवा अपने परिवार की ओर से, अपने बड़े-बुजुर्गों के जन्मदिवस/स्मृति में एक स्थाई निधि बनवाएं। जिससे लगातार यह सेवा कार्य चलता रहे।
- ⋆ अपने बच्चों के जन्मदिन पर, विवाह की वर्षगांठ पर स्वजनों को भेंट करें और सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार में सहयोग करें।
- ⋆ इस महान परोपकारी सेवा में कुछ-न-कुछ आर्थिक सहयोग अवश्य दें।

अधिक जानकारी के लिए अथवा सहयोग हेतु सम्पर्क करें -

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15- हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

Email : aryasabha@yahoo.com

MDH हवन सामग्री
मात्र 90/- किलो 10 एवं 20 किलो की पैकिंग
प्राप्ति स्थान
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली - 1, मो. 9540040339

प्रेरक प्रसंग

वे अपने प्रतीम को समझा-समझाकर सविस्तार वृतान्त सुनाते थे

गुजरांवाला के समीप एक रामनगर कस्बा (पश्चिमी पंजाब में) है। सुप्रसिद्ध आर्यविद्वान् मास्टर लक्ष्मणजी यहीं के थे। इस रामनगर के सज्जन श्री नत्थूराम चावला ने बालब्रह्मचारी मुंशी नारायण कृष्णजी के बारे में अपने कुछ संस्मरण लिखे थे। उसमें आपने लिखा था कि वे लिखते भी थे, कथा भी करते थे, आर्यकुमार सभा के सत्संग भी चलाते थे। अनाथालय तथा गुरुकुल का प्रबन्ध भी करते थे और आर्यकुमार जब मिशन स्कूल में किसी प्रश्न का उत्तर न दे पाते तो वे नारायणकृष्णजी को आकर बताते।

श्री नारायणकृष्ण पादरी बरकत मसीह को शास्त्रार्थ के लिए ललकारते। पादरी महोदय उनके तेजोमय मुखमण्डल तथा श्वेतदाढ़ी के कारण उन्हें 'महन्तजी' कहकर पुकारा करते थे।

जब ब्रह्मचारीजी आर्यसमाज के सत्संग में प्रार्थना करवाते थे तो प्रार्थना के शब्द स्वाभाविक रूप से उनके मुख से निकलते थे। उन्हें शब्द खोजने नहीं पड़ते थे। शब्दों के उच्चारण के साथ अपने सिर से ऐसे संकेत किया करते थे मानो वे अपने प्रीतम प्यारे प्रभु को समझा-समझाकर विस्तार से अपना वृत्तान्त बता रहे हों। नत्थूरामजी ने लिखा है कि उन-जैसा मिशनरी तो उस युग में भी मिलना कठिन था।

1903 ई. में जब अब्दुलगफूर (धर्मपाल) की प्रसिद्ध शुद्धि हुई तो कॉलेजपक्ष के आर्यसमाजी भी इसके पक्ष में न थे। यह नारायणकृष्णजी का तपोबल था कि बिरादरियों के विरोध की किंचित् भी चिन्ता न करते हुए अनेक हिन्दू आर्यसमाज के इस शुद्धियज्ञ के समर्थक बन गये। सिखमित्रों ने भी इसका समर्थन किया। पंजाबी के विख्यात कवि कालिदास ने उस अवसर पर शुद्धि तथा ऋषि की प्रशंसा में जो ऐतिहासिक कविता पढ़ी थी, उसकी धूम तो वर्षों तक रही। यह सब-कुछ नारायणकृष्णजी के पुरुषार्थ का फल था।

- प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु

साभार :

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

पृष्ठ 2 का शेष

क्या स्क्रीन टाइम हमारे लिए ....

ये सब चीजे ऐसे है जैसे मानो हर एक चीज हर डर, साम्प्रदायिक नफरतें, राजनितिक झूठ-सच, अफवाहें आदि सभी को मैदान में खुला छोड़ दिया गया हो!

ऐसे में सवाल बन जाता है कि क्या इन्सान इन सब चीजों से दुखी है या खुश है? इस चीज को परखने के लिए ब्रिटेन में 10 से 80 साल की उम्र के 72,000 लोगों के सर्वेक्षण किया। संस्था ने लोगों से पूछा कि उन्होंने सोशल मीडिया का कितना उपयोग किया, और उन्होंने जीवन के साथ अपनी संतुष्टि का मूल्यांकन कैसे किया। क्या वो दुखी हैं या खुश हैं? अब प्रभाव देखिये- जो लोग अधिक स्क्रीन टाइम सोशल मीडिया पर देते हैं। वे अधिक दुखी पाए गये। जिन लोगों ने इसका कभी भी उपयोग नहीं किया, वे भी अधिक दुखी पाए गये। लेकिन जो लोग मध्यम मात्रा में उपयोग करते हैं, वे सबसे अधिक खुश पाए गये। हालाँकि यह आश्चर्यजनक लग सकता है कि जो लोग कभी सोशल मीडिया का उपयोग नहीं करते हैं, वे कम खुश क्यों हैं! तो कल्पना करें कि ये अधिकांश लोग अपने दोस्तों, मित्रों के साथ संवाद करने के एक प्रमुख साधन से कट गए हैं। उन्हें सिर्फ ये दु:ख है कि वो क्यों नहीं जुड़ पाए, लेकिन ऐसे लोग बहुत कम संख्या में मिले। जबकि औसतन, लोग जितना अधिक वे उपयोग करते हैं, उतना ही कम खुश होते हैं।

हालाँकि अभी इसके पीछे का बड़ी मात्रा में ठोस डेटा नहीं आया। किन्तु यह पूरी तरह से स्पष्ट हो चुका है कि मानसिक स्वास्थ्य के मुद्दों की एक बड़ी महामारी स्क्रीन टाइम बन चुकी है। जिसके लक्षण और मरीज आगे चलकर विशाल आंकड़ों रूप में दिखाई देंगे। अगर ऐसा है, तो यह भी स्पष्ट मान लिया जाये कि अगली महामारी सोशल मीडिया होगी और महामारी का सिर्फ एक लक्षण होगा और वो होगा अत्यधिक स्क्रीन टाइम का उपयोग!

- सम्पादक

ब्रेल लिपि में
महर्षि दयानन्द जीवनी
मात्र 1000/-रु
ब्रेल लिपि में
सत्यार्थ प्रकाश
मात्र 2000/-रु
अपने क्षेत्र के नेत्रहीनों/अंध विद्यालयों को अपने आर्यसमाज की ओर से भेंट करें।
-: प्राप्ति स्थान :-
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.)
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली, मो. 9540040339

शोक समाचार

डॉ. ब्रह्ममुनि जी को भ्रातृशोक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उप प्रधान, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व प्रधान, वरिष्ठ समाजसेवी डॉ. ब्रह्ममुनि जी के बड़े भाई श्री मारुतिराव बलिराम काले जी का दिनांक 11 अप्रैल, 2022 को लगभग 90 वर्ष की आयु में निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से उनके गांव एरंडेश्वर, ता. पूर्णा जिला परभणी में किया गया।

समाजसेवक श्री सांबप्पा राऊत का निधन

आर्यसमाज रेणापुर, लातूर के पूर्व अधिकारी, समाजसेवक और आर्य लेखक डॉ. चन्द्रशेखर लोखण्डे जी के फूफाजी श्री सावप्पा राऊत जी का दिनांक 25 मार्च, 2022 को प्रात: 7 बजे 89 वर्ष की आयु में निधन हो गया। वानप्रस्थ दीक्षा के बाद वे सत्यप्रिय मुनि जी के नाम से जाने जाते थे। उनका अन्तिम संस्कार 25 मार्च को लिंगायत शमशान घाट पर पूर्ण वैदिक रीति के साथ किया गया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परम एपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650522778
E-mail : aspt.india@gmail.com

प्रथम पृष्ठ का शेष

पथराव व उपद्रव संयोग या षडयंत्र...

प्रासंगिक थी आज लाखों वर्षों बाद भी उतनी ही उपयोगी हैं। श्री राम की शिक्षाओं में सर्व समभाव, सबको साथ लेकर चलने की कामना, प्रेम सौहार्द की भावना प्रबलता से समाहित थी। किन्तु 10 अप्रैल 2022 को उनके जन्मदिन श्री रामनवमी पर दिल्ली के जेएनयू, खरगौन मध्यप्रदेश, गुजरात और झारखंड में उपद्रवियों ने श्री राम भक्तों के जुलूस पर पथराव करके घिनौना अपराध किया है।

गुजरात के साबरकांठा में श्री राम भक्तों पर प्रहार करते हुए उपद्रवियों ने कई दुकानें जला दी तो आणंद जिले में एक शख्स की मौत तक हो गई। वहां पर विश्व हिन्दू परिषद ने रामनवमी की शोभायात्रा निकाली थी, लेकिन अचानक जुलूस पर कुछ उपद्रवियों ने पत्थर मारने शुरु कर दिए। इसके बाद भारी हंगामा हुआ। उपद्रवियों ने सड़क पर कई गाड़ियों को भी फूंक दिया, हंगामा करने को लेकर पुलिस ने 15 से अधिक लोगों को गिरफ्तार किया है। इसी तरह मध्य प्रदेश के खरगौन शहर में भी पथराव और आगजनी हुई जिसमें 4 घर पूरी तरह जलकर खाक हो गए, बताया जा रहा है कि रामनवमी का जुलूस शुरू ही हुआ था कि उपद्रवियों ने डीजे को लेकर विवाद किया, बात बिगड़ी तो पत्थर फेंकने शुरु कर दिए, इसके बाद दोनों पक्ष एक दूसरे से भिड़ गए।

पुलिस ने तुरंत मोर्चा संभाला और तालाब चौक, गौशाला मार्ग, मोतीपुरा, स्टेडियम के पीछे, टावर क्षेत्र में कर्फ्यू लगा दिया। जानकारी के मुताबिक, उपद्रवियों के हमले में एक पुलिस अधिकारी भी घायल हो गया है। बताया जा रहा है कि उपद्रवियों ने शीतला माता मंदिर में भी तोड़फोड़ की है। प्रशासन ने 85 लोगों को गिरफ्तार किया है।

इसी तरह पश्चिम बंगाल के बांकुरा में रविवार को रामनवमी के जुलूस के दौरान कुछ साम्प्रदायिक लोगों द्वारा जमकर हंगामा मचाया गया। मचानताला पेट्रोल पंप मोड़ के पास स्थित मस्जिद के सामने से निकल रहे जुलूस पर भीड़ में से कुछ लोगों ने पथराव शुरू कर दिया, इसके बाद पुलिस को जवाबी कार्रवाई करते हुए भीड़ को भगाने के लिए लाठीचार्ज करना पड़ा। इस मामले में अभी तक 17 लोगों को गिरफ्तार किया गया है। झारखंड के लोहरदगा जिले के हिरही भोक्ता बगीचा इलाके के पास रामनवमी की शोभायात्रा पर पथराव और जुलूस में शामिल लोगों पर धारदार हथियारों से किये गए हमले में दर्जनों लोग घायल हो गये, जिससे पूरे जिले में तनाव फैल गया।

हालात को देखते हुए इलाके में भारी संख्या में सुरक्षा बलों की तैनाती की गयी है. प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया कि लोहरदगा में कुजरा की ओर से रामनवमी की शोभायात्रा आ रही थी तभी कब्रिस्तान के पास दूसरे समुदाय के कुछ लोगों ने नारेबाजी नहीं करने के लिये कहा। लेकिन जब तक कोई कुछ समझ पाता कुछ शोभायात्रा में शामिल लोगों पर पथराव शुरू हो गया, जिसमें अनेक लोग घायल हो गए।

उपद्रव के इस क्रम में भला भारत की राजधानी में स्थित जेएनयू क्यों पीछे रहता। यहां भी एबीवीपी के कावेरी हास्टल में रहने वाले छात्रों ने रामनवमी की पूजा आयोजित की थी। जबकि इस पूजा में विघ्न डालने का पोस्टर तीन दिन पहले ही निकल चुका था। तीन दिन से इसी परिसर में रहने वाले कुछ उपद्रवी तत्व वामपंथियों और एनएसयूआई के समर्थन से लगातार धमकी दे रहे थे कि पूजा आयोजित नहीं होने देंगे। जेएनयू में एबीवीपी के अध्यक्ष रोहित कुमार के मुताबिक यह पूजा रविवार को साढ़े तीन बजे होने वाली थी, लेकिन अचानक कावेरी छात्रावास के गेट पर कुछ लोग आकर हल्ला करना शुरू कर देते हैं। इस वजह से पूजा शाम साढ़े पांच बजे शुरू होती है। उसके बाद लेफ्ट और एनएसयूआई के छात्रों ने पथराव और मारपीट शुरू कर दी और एक बड़ा बवाल खड़ा हो गया। इसके पीछे मांसाहार और शाकाहार को भी कारण बताया जा रहा है। लेकिन कुछ भी हो यह एक सोची समझी साजिश है, वैर विरोध की भावना को भड़काने का षडयंत्र है, इसका निराकरण आवश्यक है।

आर्य समाज का मानना है कि प्रत्येक पर्व प्रेरणा के स्रोत होते हैं। जिन्हें हम लाखों वर्षों से मनाते आ रहे हैं। अगर कहीं किसी एक स्थान पर अचानक कोई अप्रिय घटना घट जाती है तो उसे समझा जा सकता है, लेकिन एक दिन, एक ही तरीके से पांच राज्यों में पथराव, आगजनी, हिंसक वारदात जिसमें कई लोगों को मौत के घाट उतार दिया गया, यह बर्दास्त करने लायक बात नहीं है, यह तो एक वर्ग विशेष द्वारा सुनियोजित तरीके से किया गया कुठाराघात है। इसकी गहन जांच होनी ही चाहिए। मध्यप्रदेश सरकार की तरह गुजरात, बंगाल, झारखंड और दिल्ली में भी असमाजिक अराजक तत्वों को सबक जरूर सिखाना चाहिए। जिससे सुनिश्चित हो सके कि भविष्य में इस प्रकार की आपराधिक मानसिकता के लोग फिर सिर न उठा सकें।

हमारा देश श्री राम का देश है, श्री कृष्ण का देश है, वीर हनुमान का देश है, महर्षि दयानंद सरस्वती, स्वामी श्रद्धानंद आदि महापुरुषों का देश है जिन्होंने अपनी वैदिक संस्कृति, सभ्यता और संस्कारों की रक्षा के लिए, मानवीय मूल्यों के संरक्षण के लिए बड़े से बड़े बलिदान दिए हैं, उनके प्रेरणा पर्वों पर इस प्रकार की घटनाएं हमें जगाती हैं कि अगर अब भी नहीं जागे तो फिर कब जागेंगे। जागो रे जिन जागना, अब जागन कि बार... अगर इसय तरह से सोते रहे तो सब कुछ लूट जाएगा, और सब कुछ लुटाकर होश में आए तो क्या? इसलिए समय रहते समाज को जागना होगा, अपनी शक्तियों को समझना होगा, अपने महापुरुषों से प्रेरणा लेकर आगे बढ़ना होगा, नहीं तो बहुत देर हो जाएगी। ये पथराव और आगजनी की यह घटना कोई साधारण घटना नहीं है, इस पर जहां प्रशासन पूरी ततपरता से कार्यवाही करे वहीं समाज भी अपने देश और अपनी संस्कृति की रक्षा के लिए जागरूक हो। *- विनय आर्य, महमन्त्री*

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 18 अप्रैल, 2022 से रविवार 24 अप्रैल, 2022

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2021-22-2023

LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 20-21-22/04/2022 (बुध-वीर-शुक्रवार)

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2021-23

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 20 अप्रैल, 2022

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में नवनियुक्त अध्यापकों का नौ दिवसीय प्रशिक्षण सम्पन्न

जीवन की आहुतियां देने वाला केन्द्र रहा है गुरुकुल कांगड़ी - विनय आर्य

प्रतिष्ठा में,

हरिद्वार (बद्री विशाल)। स्वामी श्रद्धानंद ने भारतीय संस्कृति से ओतप्रोत वैदिक विचारधारा के प्रचारक, समाज सुधारक एवं भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के क्रांतिकारियों को तैयार करने के लिए ही गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की स्थापना की थी, जिसमें संस्कृत एवं हिंदी भाषा में प्राचीन एवं आधुनिक विषयों को एक साथ पढ़ाने का केंद्र था। अंग्रेजों के विरुद्ध लड़ाई लड़ने के लिए अंग्रेजों के विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों में पढ़ने वाले छात्र तैयार नहीं हो सकते थे, इसीलिए भारतीय संस्कारों से ओतप्रोत उच्च शिक्षित स्नातकों को गुरुकुल कांगड़ी में तैयार किया जाता था। जिन्होंने पत्रकारिता जगत, चिकित्सा जगत, शिक्षा जगत एवं उद्योग जगत में क्रांति की। ऐसे स्नातकों की लंबी श्रृंखला है। यह उद्गार गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के प्रबंध समिति के सदस्य एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री विनय आर्य ने व्यक्त किए। वे शिक्षा-प्रशिक्षण संकाय द्वारा आयोजित 9 दिवसीय प्रेरणा कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि आर्य समाज वह संस्था है जिसने मुगलों एवं अंग्रेजों के द्वारा चलाए गए षड्यंत्रों का सामना करने के लिए डीएवी महाविद्यालय, गुरुकुल एवं कन्या महाविद्यालय खोले। वहीं दूसरी ओर 1879 ईस्वी में ही विदेशी वस्तुओं की होलियां जलाकर स्वदेशी के आंदोलन को प्रारंभ किया, साथ ही अपना बैंक खोलकर आर्थिक स्वयत्तता का भी प्रारम्भ किया। आर्य समाज लाहौर से पंजाब नेशनल बैंक की शुरुआत की जिसके प्रथम खातेदार लाला लाजपत राय रहे।

आर्य समाज वह संस्था है जिसने विक्टोरिया के शासन की नींव हिला दी थी। इसी संस्था से हैदराबाद सत्याग्रह आंदोलन कर निजाम हैदराबाद को भी चुनौती दी गई। राष्ट्रवादी शक्तियों का केंद्र गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय वर्तमान में भी बहुत प्रासंगिक है यहां के शिक्षकों एवं विद्यार्थियों को अपनी अलग पहचान बना कर

राष्ट्र के सामने प्रस्तुत होना चाहिए। उन्होंने कहाकि वेतन तो सब लेते हैं परंतु यह गुरुकुल जीवन की आहुतियां देने वालों का केंद्र रहा है। आज भी राष्ट्र को ऐसे ही समर्पित शिक्षकों और छात्रों की आवश्यकता है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर रूप किशोर शास्त्री ने कहा कि आपने जो इतिहास एवं प्रेरणा के वाक्य इस अवसर पर कहे हैं वे निश्चित रूप से इस कार्यक्रम में प्रतिभाग कर रहे शिक्षक शिक्षिकाओं का मार्गदर्शन करेंगे उनके भावी जीवन का दिग्दर्शन भी कराएंगे। कार्यक्रम का संचालन शिक्षा प्रशिक्षण संकाय के संकायाध्यक्ष प्रोफेसर विनय विद्यालंकार ने किया। कार्यक्रम आगामी 13 अप्रैल तक प्रतिदिन चलेगा, जिसमें 83 शिक्षक शिक्षिकाएं प्रतिभाग कर रहे हैं। इस अवसर पर विश्वविद्यालय कुलसचिव डॉ सुनील कुमार, प्रोफेसर सोमदेव शतांशु, प्रो ब्रह्मदेव विद्यालंकार, प्रोफेसर राम प्रकाश वर्णी, प्रो धर्मेंद्र कुमार, प्रो राकेश कुमार जैन, प्रो सुरेंद्र कुमार त्यागी, प्रो सत्येंद्र राजपूत, डॉ दीनदयाल, वेदव्रत, डॉ सुनीति आर्या, डॉ रेखा सिंह, डॉ बिंदु मलिक, डॉ रीना वर्मा, डॉ विपिन बालियान, डॉ विनीत कुमार, डॉ सुनील चौधरी आदि ने भाग लिया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह